पूंजीवाद का रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में समीक्षात्मक अध्ययन

राजेश कुमार

सहायक आचार्य . हिंदी

केपी कॉलेज ऑफ आर्ट एंड साइंस आहोर

प्रस्तावनाः—

पूंजीवाद' का अर्थ होता है, जिसके पास अधिक धन होता है, उसके पास ताकत एवं सत्ता दोनों होते हैं। वे मनमाने ढंग से गरीबों का शोषण करते हैं और कानून को भी जैसे चाहे, वैसे उपयोग में लाते हैं। दिनकर जी का मत है कि पूँजीवादी व्यवस्था श्रमिकों का शोषण करती है और समस्त उत्पादन—साधनों को अपने अधिकार में कर लेती है। वास्तव में यही पूँजीवादी व्यवस्था का एक मात्र लक्ष्य होता है। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि 'दिनकर' किसी परिचय के मोहताज नहीं है। कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में आश्चर्यजनक रूप से साम्य देखने को मिलता है। इन्होंने अपने जीवन तथा साहित्य में सर्वत्र अन्याय का विरोध किया है। वे सदैव न्याय का समर्थन करते रहे। जहाँ तक हमारे आर्थिक—क्षेत्र का प्रश्न है, उनके क्रान्तिकारी विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त होते रहे हैं। दिनकर के इस क्रांतिकारी आर्थिक चिंतन को प्रभावित किया है, कार्ल मार्क्स ने। इसलिए कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' (जिन्होंने स्वयं अपने जीवन में भयंकर आर्थिक विषमता का सामना किया था) ने निरन्तर शोषितों एवं पीड़ितों का पक्ष लिया है।
'

यथार्थवादी चित्रणः—

जैसा कि सर्वविदित है, मानव की वैज्ञानिक प्रगति के पश्चात, हमारी सामाजिक व्यवस्था पूँजीवादी युग में बदल गयी है। इस प्रणाली का विकास दो दिशाओं में हुआ — कृषि और औद्योगिक। समग्र विश्व के धरातल पर पूँजीवादी का विकास साम्राज्यवाद के रूप में हुआ। धन के असमान वितरण के कारण वर्ग—वैषम्य, विद्रोह का आरंभ, यांत्रिक—शक्ति का उपयोग इत्यादि समस्याएँ उत्पन्न हुईं। पूँजीवादी का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह है कि इसके कारण दलित वर्ग आजीवन दुःख भोगता है। इसलिए कवि दिनकर ने मानव कल्याण के पक्ष में शोषण तथा अत्याचार पर आधारित पूँजीवादी व्यवस्था का विरोध किया है। वे चाहते हैं कि इस जड़ व्यवस्था का नाश हो जाए और समाज में मानवतावादी विचारधारी की स्थापना हो। उनका मत है कि आवश्यकतानुसार क्रांति का भी समर्थन किया जा सकता है। निर्धनों का शोषण होता देखकर वे लिखते हैं —

धन के विलास का बोझ दुखी, दुर्बल, दरिद्र, जन ढोता है।
दुनिया को भूखों मार जब सुखी महल में सोता है ।
स्वानों को मिलते दूध वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ो की रात बिताते हैं
युवती के लज्जा वसन बेच जब ब्याज चुकाते जाते हैं
मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी—सा द्रव्य बहाते हैं
पापी महलों का अहंकार देता मुझको तथा आमंत्रण ।

पूँजीवादी व्यवस्था के कारण जो आर्थिक विषमता उत्पन्न हुई है, उसका यह यथार्थवादी चित्रण है। वास्तव में पूँजीपति वर्ग इतना शोषण करता है कि खून की आखरी बूँद तक नीचोड़ लेना चाहता है। इसकी अमानवीयता एवं विषमता का चित्र इन शब्दों ने खींचा है —
वे भी यहीं, दूध से अपने श्वानों को नहलाते हैं
ये बच्चे भी यहीं कब्र में 'दूध—दूध' जो चिल्लाते हैं।

वर्ग—वैषम्य—

अपनी इस 'हुंकार' कृति के माध्यम से 'दिनकर' जी ने दिखाया है कि पूँजीपतियों की धन लोलुपता ने कुछ मनुष्यों को मजदूर बनाया तो कुछ को भिक्षुक। इस पूँजीवादी युग में अर्थ यानी कि रूपया ही जीवन का प्रधान तत्व बन गया है।

विडम्बना तो यह है कि समाज में द्ररिद्रों को खाने के के लिए अच्छी रोटी भी नहीं मिलती और दूसरी ओर धनिक वर्ग घी और दूध से नहाता है। कवि ने 'नीलकुसुम' में इस स्थिति को इन शब्दों में निरूपित किया है –

कहीं दूध के बिना तरसती मानव की संतान।
कहीं क्षीर के मटके खाली करते जाते श्वान।
कहीं वसन रेशम के सस्ते, महँगी कहीं लॅंगोटी।
कोई घी से नहा रहा, मिलती न किसी को रोटी।

कवि का चिंतन इतना वास्तविक है कि वे स्पष्ट अभिमत देते हैं कि जिनको भूख लगी है, उनके सामने काव्य या दर्शन की बात करना बेकार है। उनके पास तो सोचने की शक्ति भी नहीं होती। कवि कहते हैं कि इन भीखमंगों को आप और कुछ नहीं, बस रोटी दो।

'अभी भूख से ही जो प्राणी तड़प रहा दिन रात,
रोटी की चिंता में कटते जिनके सायं–प्रात
दहक रहे भीषण क्षुधाग्नि वे जिसके प्राण अभागे,
निर्दय है, दर्शन परोसता है उसके आगे ।
रोटी दो, उसे मीत दो, जिसको भूख लगी है ।
भूखों में मत उभारना छल है, दगा, ठगी है ।
रोटी और वसन, ये जीवन के सोपान प्रथम हैं ।

क्रांति का समर्थनः–

जिनके कारण इस स्थिति का निर्माण हुआ है, कवि उस पूँजीवादी को ही समाप्त कर देना चाहते हैं। यह धनिक वर्ग शोषण तथा अत्याचार कर धनिक हुआ है। इसलिए 'दिनकर' समाज की पीड़ित और शोषित जनता को पूँजीपति वर्ग के विरूद्ध क्रांति करने के लिए प्रेरित करते हैं। यहॉं दिनकर ने ऐसी सामाजिक व सामूहिक क्रांति को अन्याय एवं अत्याचार को दूर करने का साधन माना है। ऐसा कर पुनः समरूप समाज का निर्माण किया जा सकता है । अतः कवि का दृष्टिकोण विध्वंस करने का नहीं, परंतु वर्ग वैषम्य और वर्ग संघर्ष मिटाकर हितकारी समाज का निर्माण करने का है । वे श्रमिकों को क्रांति करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि–

दुनिया से उसका रिवाज उड़ाने के लिए ।
मजदूर वर्ग को गद्दी पर बिठाने को नहीं,
बल्कि हमेशा के लिए
कर्म करो वर्ग को खतम करके
आदमियों की नयी दुनिया बसाने के लिए ।

कवि 'दिनकर' विश्व में ऐसी आर्थिक व्यवस्था की आकांशा रखते हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का समान महत्व हो। सब के लिए धन व चीज वस्तुओं का समान वितरण हो। यहॉं इनकी विचारधारा का अधिकांश हिस्सा कार्ल मार्क्स के साम्यवाद से मिलता–जुलता है । ध्यातव्य है कि मार्क्स के विचारानुसार–

''साम्यवाद का आशय आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन साधनों पर समाज का स्वामीत्व स्थापित होना, उत्पादन शक्तियों का तेजी से उन्नति करना, उत्पादन का एक योजना के अनुसार संघटित किया जाना है।

कवि दिनकर ने भी खण्ड काव्य 'कुरूक्षेत्र' में इस विचारधारा का समर्थन किया है। पूँजीवादी तथा साम्राज्यवादी सामाजिक परंपरा के नष्ट होने के बाद नवनिर्मित समाज अपने सदस्यों को आर्थिक समानता प्रदान करेगा।

''शांति नहीं तब तक जब तक
सुखी–भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो ।

किसान की वेदनाः–

किसान परिवार में जन्म लेने वाले 'दिनकर' ने दुनिया देखी है। इसलिए इनके विचारों में कहीं कृत्रिमता नहीं है। इन्होंनें किसान की दुर्दशा को देखा है। यह वर्ग निरंतर शोषण का शिकार बना है। कृषक श्रम करते थे। धनोपार्जन का अधिक भाग जमींदारों के कोष में पहुॅंच जाता था। भारीतय कृषक की इस पीड़ित अवस्था को इन शब्दों में वर्णित किया गया है –

जेठ हो कि पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है,
छूटे बैल से संग, कभी जीवन में ऐसा धाम नहीं है ।
मुख में जीभ, शक्ति भुज में, जीवन में सूरत का नाम नहीं है,

वसन कहां ? सूखी रोटी भी मिलती है दोनों शाम नहीं है ।
विभव स्वप्न से दूर, भूमि पर दुखमय संसार कुमारी,
खलिहानों में जहाँ मचा करता है हाहाकार कुमारी ।
बैलों का ये बन्धु वर्षभर क्या जाने, कैसे जीते हैं ?
जुबॅाबन्द, बहती न ऑख, गम खा, शायद ऑसू पीते हैं ।

समापनः—

इस प्रकार कवि 'दिनकर' अपने काव्य में पूँजीवादी व्यवस्था को नकारकर, आवश्यकतानुसार वर्ग—संघर्ष का भी आह्वान करते हैं। वास्तव में, 'दिनकर' का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि वे निर्धनों का शोषण सह ही नहीं सकते थे। वे सदैव अन्याय का विरोध तथा न्याय का समर्थन करते रहे। सुक्ष्म दृष्टिकोण से देखें तो, यहाँ क्रांति के भीतर शोषत वर्ग के लिए सहानुभूति एवं संवेदना दिखायी देती हैं।

कवि दिनकर की रचनाओं की आलोचना के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि 'दिनकर' ऐसी व्यवस्था चाहते हैं, जिसमें किसी भी मनुष्य का शोषण न किया जाता हो और मनुष्य का जीवन सुख, सुविधा एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण हो।

संदर्भः—

- वही, पृ. 3
- नीलकुसुम, रामधारी सिंह दिनकर, पृ. 106
- वही, पृ. 112
- वही, पृ. 22
- कुरूक्षेत्र, दिनकर, पृ. 31
- वही, पृ. 22
- आत्मा की ऑखें, दिनकर, पृ. 70
- दिनकर का व्यक्तित्व, डॉ. एस, प्रमीला, पृ. 108
- हुंकार, रामधारी दिनकर, पृ. 73
- मार्क्सवाद क्या है?, ओमप्रकाश संगल, पृ. 63